BA(Hons.) PART –I , Paper- II

डॉ0 गौतम कुमार

अतिथि शिक्षक

राजनीति विज्ञान विभाग

आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय, शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

महात्मा गॉधी के सत्य और अहिंसा की अवधारणा

सत्य की अवधारणा – गॉधीजी के अनुसार, सत्य सत् शब्द से निकला है, जिसका अर्थ– अस्तित्व या होना। गॉधी जी सत्य को ईश्वर मानते थे। उनके अनुसार सत्य वही है, जिसकी सत्ता होती है, जो सदा टिका रहता है। परमात्मा की सत्ता तीनों कालों में बनी रहती है, जो सत्य है। गॉधीजी अपने जीवन का ध्येय सत्य का शोध करना समझते थे। सामान्यतः सत्य शब्द का अर्थ केवल सच बोलना ही समझा जाता है, लेकिन गॉधी जी ने सत्य का व्यापक अर्थ लेते हुए बार–बार आग्रह किया है कि विचार में, वाणी में और आचार का सत्य होना भी सत्य है, सत्य की अपनी ही ईश्वर में सच्ची शक्ति है। महात्मा गॉधी का सम्पूर्ण जीवन सत्यमय था। सत्य के सामने वे किसी से समझौता नहीं करते थे। सत्य और ईश्वर में वह कोई भेद नहीं मानते थे। गॉधीजी का आग्रह था कि हमारा प्रत्येक व्यवहार और कार्य सत्य के लिए होना चाहिए। सत्य के आभाव में हम किसी भी नियम का शुद्वतापूर्वक पालन नहीं कर सकते हैं। गॉधीजी सापेक्ष सत्य अर्थात् साधन में स्पष्ट भेद मानते थे। उनका मानना था कि सापेक्ष सत्य, वह सत्य है जिसे हम किन्हीं विशेष परिस्थितियों के संबंध में देखते हैं। वह सम्पूर्ण सत्य नहीं होता जो एक प्रकार की परिस्थितियों में सत्य हो सकता है।

अहिंसा संबंधी अवधारणा – गॉधीजी के लिए अहिंसा का अर्थ अत्यन्त व्यापक है, जिसमें कार्य ही नहीं अपितु विचार में भी सावधान रहना आवश्यक है। गॉधीजी के अनुसार, अहिंसाा के दो पक्ष हैं – नकारात्मक और सकारात्मक। किसी प्राणी को काम, क्रोध तथा विद्वेष से वशीभूत होकर हिंसा न पहुॅचाना इसका नकारात्मक रूप है। इससे अहिंसा का पूरा स्वरूप समझ में नहीं आता है। अहिंसा के यथार्थ स्वरूप से हमें इसके भावनात्मक पक्ष का पता लगता है। भावनात्मक अथवा सकारात्मक स्वरूप वाली अहिंसा को सार्वभौमिक प्रेम और करूणा की

भावना कहा जाता है। इसके मूल तत्व प्रेम, अन्याय का विरोध और वीरता है। गॉधीजी ने भारतीय परम्परा से तथा बाइबिल के पर्वत प्रवचन और टॉलस्टॉय के गंथों से अहिंसा के सिद्वांत को ग्रहण किया, किन्तु उन्होंने अनेक क्षेत्र में इसका व्यावहारिक प्रयोग करके इसकी सफलता को निर्विवाद रूप से प्रमाणित किया है।

गॉधीजी की धारणा है कि अहिंसा मानव जाति की महानतम् शक्ति है। अहिंसा की शक्ति द्वारा पूरा संसार नियंत्रित एवं संचालित है। गॉधीवाद की मूल धारणा यह है –

1. गॉधीजी का मानना है कि अहिंसा मानवीय जीवन की स्वाभाविक प्रवृति है। अज्ञान, असत्य और क्रोध से वशीभूत होकर कोई व्यक्ति हिंसक आचरण को अपना लेता है लेकिन यह अस्थायी है, जैसे ही उसके अन्दर विवेक और चेतना की भावना जागृत होती है वह हिंसक आचरण को त्याग कर अहिंसा को अपना लेता है।
2. गॉधीजी का मानना है कि अहिंसा, हिंसा की तुलना में नैतिक, व्यवहारिक और अधिक प्रभावशाली है। हिंसा किसी समस्या का समाधान नहीं है लेकिन अहिंसा विरोधी के मन–मस्तिष्क पर स्थाई विजय दिलाने में समर्थ है।
3. गॉधीजी का मानना है कि अहिंसा का मार्ग को अपनाकर सफलता पाने में विलम्ब हो सकता है लेकिन सफलता सुनिश्चित है। इनके अनुसार, "अहिंसा एक ऐसा अस्त्र है जिसे कोई भी भौतिक बल झुका नहीं सकता। अहिंसा की शक्ति को संख्या या मात्रा से नहीं बांधा जा सकता।"

गॉधी जी के द्वारा अहिंसा की तीन अवस्था को बतलाया गया है, जो निम्न प्रकार है :–

1. **जागृत अहिंसा** – जागृत अहिंसा, वह अहिंसा है जो किसी दुःखपर्ण आवश्यकता से पैदा न होकर अन्तरात्मा की स्वाभाविक पुकार से जन्म लेती है। इसको अपनाने वाले अहिंसा को बोझ समझकर स्वीकार नहीं करते हैं वरन् आन्तरिक विचारों की उत्कृष्टता या नैतिकता के कारण स्वीकार करते हैं। इसे सबल व्यक्ति अपनाते हैं और वे शक्ति सम्पन्न होकर भी शक्ति का प्रयोग नहीं करते हैं।
2. **औचित्यपूर्ण अहिंसा** – औचित्यपूर्ण अहिंसा वह है जो जीवन के किसी क्षेत्र में विशेष आवश्यकता पड़ने पर औचित्यानुसार एक नीति के रूप में अपनाई जाती है। यह

अहिंसा निर्बल व्यक्तियों की अहिंसा है या असहाय व्यक्तियों का निष्क्रिय प्रतिरोध। इसमें नैतिक विश्वास के कारण नहीं वरन् निर्बलता के कारण ही अहिंसा का प्रयोग किया जाता है। यद्यपि यह अहिंसा जागृत अहिंसा की भॉति प्रभावशाली नहीं है फिर भी इसका पालन ईमानदारी, सच्चाई और दृढ़ता से किया जाय, तो इससे कुछ सीमा तक वांछित लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है।

3. **कायरों की अहिंसा** – कई बार डरपोक तथा कायर लोग भी अहिंसा का दम्भ भरते हैं। गॉधीजी ऐसे लोगों की अहिंसा को अहिंसा न मानकर निष्क्रिय हिंसा मानते हैं। उनका विश्वास था कि कायरता और अहिंसा पानी और आग की भॉति एक साथ नहीं रह सकते। अहिंसा वीरों का धर्म है और अपनी कायरता को अहिंसा की ओट में छिपाना निन्दनीय तथा घृणित है। यदि कायरता और हिंसा में से किसी एक का चुनाव करना हो तो गॉधीजी हिंसा का चुनाव करते हैं। इस संबंध में गॉधीजी का विचार है कि, "यदि हमारे हृदय में हिंसा भरी है तो हम अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए अहिंसा का आवरण पहनें, इससे हिंसक होना अधिक अच्छा है।" इस प्रकार गॉधीवादी अहिंसा को कायरता की संज्ञा देना अनुचित हैं।